रिकॉर्ड :– ले लो दुआएँ माँ–बाप की.... ॐ पिताश्री 30/7/64

ओम् शांति। (अ)ब बच्चे माँ–बाप की गोद में बैठे हुए हैं अथवा बच्चे स्कूल में टीचर के पास बैठे हुए हैं। टीचर की गोद नहीं कहेंगे। बच्चे जानते हैं, हम सत्गुरु के पास भी बैठे हैं ज्ञान सुनने लिए। किससे सुनने? ज्ञान सागर तो बाबा ही है। जानते हैं, वो परमधाम से पधारा हुआ है हमको शिक्षा देने। तुम्हारी बुद्धि परमधाम, स्वीटहोम तरफ लगी हुई है। भल पढ़ाई तो यहाँ ही है। मात–पिता सन्मुख बैठे हैं तो भी बुद्धियोग अथवा याद निर्वाणधाम तरफ होनी है। हमको बाप के साथ घर जाना है, फिर विष्णु के घर आवेंगे। वो भी घर है, यह भी घर है। विष्णुपुरी ससुर घर जाना है। पहले तो बाप, जो लायक बनाते हैं, उनको याद करना है। माँ–बाप कन्या को लायक बनाते हैं ना– ससुर घर जावेगी तो माँ–बाप का शो करेगी। कहेंगे, बच्ची तो बड़ी अच्छी सुलक्षणी है। अब तुम जानते हो, हम प०पि०प० के सन्मुख बैठे हैं, पढ़ रहे हैं। बाप बच्चों पर बहुत मेहनत करते हैं। यह है उनकी कृपा। बच्चा बैरिस्टर बनता है तो कहेंगे– माँ–बाप ने अच्छी रीत पालना की है, पढ़ाया है। मात–पिता क्रियेटर भी होते हैं, डायरैक्टर भी होते हैं। मेल बच्चों का मोह बाप में जाता है, बच्ची का मोह माँ पास जाता है; क्योंकि बच्चों को बाप से वर्सा मिलना है, कुमारी तो जाकर माँ बननी है। अब यहाँ तुम ब्राह्मण कुल भूषण हो। ब्राह्मण तो गाए जाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के संतान तो बहुत हैं। उन ब्राह्मणों से भी तुम पूछ सकते हो कि तुम कुख संतान हो या ब्रह्मा की मुख संतान हो? अगर कुख संतान हो, सो तो लौकिक मात–पिता से जन्म लेते हो। ब्रह्मा मुख से तुम कब पैदा हुए? बताए न सकेंगे। तुम प्रैक्टिकल में जानते हो, हम ब्रह्मा मुख कमल से एडॉप्ट हुए हैं। एडॉप्ट किया है शिवबाबा ने। यहाँ तुम समझते हो, हम बाप, टीचर, गुरु तीनों के सन्मुख बैठे हुए हो(हैं)। बाप तो मैनर्स सिखलाते हैं, श्री कृष्ण जैसे दैवी गुणवान बनो। सर्वगुण सम्पन्न... यहाँ ही बनना है पुरुषार्थ कर। मनुष्य तो यह नहीं जानते कि राधे–कृष्ण अगले जन्म में कौन थे। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। ल०ना० के मंदिर में देखेंगे, तो कहेंगे– अगले जन्म में यह ब्रह्मा–सरस्वती थे। तुम निश्चय से जानते हो। जो पूज्य थे वो ही पुजारी बने, फिर पूज्य बनते हैं। पुजारी भक्त को कहा जाता है। नर से नारायण वा बैगर टू प्रिंस बनाने का वर्सा बाप बिगर कोई दे न सके। तुमसे अगर कोई पूछे– तुम क्या कर रहे हो? तो तुम बोलो, हम गॉड फादर द्वारा पढ़ रहे हैं। एम–ऑब्जेक्ट तो हरेक की बुद्धि में है ना! हम बाबा से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। स्वर्ग का वर्सा है ही ल०ना० वा प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने का। बाबा ने समझाया है प्रिंस–प्रिंसेज की कॉलेज भी होती है, जहाँ प्रिंस–प्रिंसेज़ पढ़ते हैं। यहाँ इस कॉलेज में तुम प्रिंस–प्रिंसेज़ बनते हो। जानते हो, भविष्य नए विश्व का प्रिंस–प्रिंसेज़ बनने लिए हम पढ़ रहे हैं। नए विश्व को सतयुग कहा जाता है। सतयुग में अथवा कलियुग में होंगे तो मनुष्य ही ना! नॉलेज भी मनुष्य को मिलती है, जानवर को तो नहीं देंगे। मनुष्य दैवी गुण वाले थे, अभी आसुरी गुणों वाले बने हैं, फिर हम दैवी गुण वाले बनते हैं– यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। यह तो सहज समझने की बात है। 84 का चक्कर भी भारत के लिए ही है। 84 के चक्कर का राज़ और किसकी बुद्धि में नहीं बैठेगा। स्वदर्शनचक्र देवताओं को दे दिया; परन्तु उन्हों को तो है नहीं। मनुष्य कहेंगे, स्वदर्शनचक्र तो कृष्ण को था। विष्णु, ल०ना० का कम्बाइंड रूप है। छोटे पन में राधे–कृष्ण थे; परन्तु वो भी सिर्फ कृष्ण को देते हैं, राधे को कब चक्र नहीं दिखाते। (लक्ष्मी) को भी नहीं, सिर्फ नारायण को दिखाते हैं वा विष्णु को देते, उसमें लक्ष्मी आ जाती है। वास्तव में स्वदर्शनचक्रधारी तुम हो। तुम जानते हो, बड़ी वण्डरफुल पढ़ाई हम पढ़ रहे हैं गॉड फादर से। वो ही ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, सत्–चेतन है। आत्मा को ही सत्–चेतन कहा जाता है। शरीर को सत् और चेतन कह न सकेंगे। पो..... 6–7 महीने का वो भी जड़ होता है, भल वृद्धि को पाता है। वृद्धि को तो हर चीज़ पाती है; परन्तु मनुष्य की महिमा है। मनुष्य की महिमा भी होती है तो मनुष्य की ग्लानि भी होती है। अख़बार में पढ़ा था– इग्लैंड का प्राइम मिनिस्टर हाउस ऑफ कामंस(चर्च) में गया तो साथ में बिल्ली को ले गया।

....

देखो, बिल्ली का भी कितना मान होता है! वहाँ तुम भी सिवाय परमिट के नहीं जा सकते, बिल्ली को परमिट मिल जाती। मनुष्य जानवर बुद्धि हैं ना! वास्तव में मनुष्य को मनुष्य की पालना करनी है। मनुष्य को जानवर थोड़े ही पालने हैं; परन्तु इस समय मनुष्य भी जानवर मिसल बन गए हैं। तुम भी अब समझते हो, हम पतित जानवर बुद्धि थे। मनुष्य भल याद करते हैं ''ओ गॉडफादर''; परन्तु जानते कुछ भी नहीं। सिर्फ कहा, जाना कुछ नहीं, इ(स)से क्या फायदा! बहुत मनुष्य कहते हैं, कुत्ता भी भगवान को याद करता है। .... भरता है ना। वो भी गॉड सिर्फ कहे, जाने कुछ नहीं, तो मनुष्य और जानवर में क्या फर्क हुआ! अब तुम कितने ऊँच बनते हो। अभी तुम्हारी बहुत महिमा निकलेगी प्रैक्टिकल में। तुम्हारा जब प्रभाव निकलेगा तो बस, कहेंगे– बी.के. पास जाना है। बी.के.कुमारियाँ शिव के पौत्रे–पौत्रियाँ हैं। बाबा तो एक है ना! मम्मा–बाबा एक है, जि(स)से तुम रचे जाते हो। जानते हो, हम शिवबाबा के पौत्रे व पौत्री हैं। इसमें बूढ़े–जवान आदि की भी बात नहीं है। हम शिवबाबा के पौत्रे, ब्रह्मा के पुत्र–पुत्री ठहरे। कितनी सहज बात है। यह ब्राह्मणों का कुल है ना! क्रियेटर तो बाप ही हुआ। तुम जानते हो, हम शिवबाबा के बच्चे, इस झाड़ का पहले–2 फाउंडर हैं। यह ब्रह्मा संगम पर थुर में बैठे हैं ना। हम ऊँच ते ऊँच शिवबाबा के पौत्रे हैं, उ(स)से हम स्वर्ग का वर्सा पाए रहे हैं। यह कब भूलना न चाहिए। देह सहित जो कुछ भी है, सबको भूल अशरीरी बनना है। अभी हमको वापिस जाना है डाडे के पास अथवा स्वीट होम में जाना है। हम शिवबाबा के पौत्रे–पौत्रियाँ हैं। बाप भी तो ज़रूर चाहिए। बरोबर हम बी.के.कुमारियाँ हैं। शिव के पौत्रे हैं। डाडे का ही वर्सा मिलता है। विश्व की बादशाही को ही सच्चा स्वराज्य कहा जाता है। सारे विश्व का तुम मालिक बनते हो, कोई का डर नहीं। इसको अद्वैत राज्य कहा जाता। वहाँ दूसरा कोई रहता नहीं। सर्वगुण सम्पन्न.... अहिंसा परमोधर्म वाले ... बन जाते हैं। बाबा समझाया है, हिंसा दो प्रकार की होती है। एक वायोलेंस की, दूसरी हिंसा फिर है काम–कटारी चलाना। हम डबल अहिंसक हैं। सतयुग में हिंसा की बात नहीं होती– न जिस्मानी, न विकारों की। अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म कहते हैं। उसके हम भाती बनते हैं। ब्राह्मण से फिर हम देवता बनेंगे। हमारा मनुष्य नाम निकल जाता। हम मनुष्य से देवता बनते हैं; जैसे बैरिस्टर, इंजीनियर आ(दि) बनते हैं। कैसे बने? सो तो वो खुद ही जान सकते। तुम जानते हो, हम इस पढ़ाई से देवता बनते हैं। बहुत सहज है। वैराइटी धर्मों वाला यह जो झाड़ है, उसकी आदि–मध्य–अंत का तुमको ज्ञान है, जो और कोई को नहीं है। तुम जानते हो, हमारा बाप, टीचर परमधाम से आए हैं हमको पढ़ाने। परमधाम कितना ऊँच है! ऐरोप्लैन भी वहाँ जाय न सके। बाबा बिगर पंख कैसे आकर पढ़ाते (हैं)। तो इतनी खुशी रहनी चाहिए– हमारा बाबा टीचर भी है। रहते हैं परमधाम में। वहाँ से आ(ए), हमको पढ़ाए, जाते हैं। उनको तो बहुत ही सर्विस करनी है। भक्तों को भी राज़ी करने की सर्विस करनी होती है। भक्त मुझे नहीं जानते, जिन्हों की मैं इतनी सर्विस करता हूँ। नौधा भक्ति वालों की भी दिल पूरी करता हूँ, जिसका भी सा० बच्चों ने किए हैं। नौधा भक्ति में बैठते हैं– बस, कृष्ण दर्शन दो। आँखों से ज़ारों ज़ार आँसू बहते रहते। जब ऐसी तीव्र भक्ति करते हैं तब सा० कराता हूँ। वो है भक्तिमार्ग। तो इस समय उन्हों को भी राज़ी करता हूँ। तुमको तो सन्मुख बैठ सुनाता हूँ, पढ़ाता हूँ। भगवानुवाच्य तो बरोबर है, इसमें कोई शक नहीं। गीता में भी लिखा हुआ है– हे बच्चे! तुमको नर से ना० बनाने राजयोग सिखला रहा हूँ; परन्तु नाम कृष्ण का डाल दिया है। कृष्ण की आत्मा तो इस समय अंतिम जन्म में है। वो बैठ पढ़ते हैं। कृष्ण भगवानुवाच्य नहीं है। बच्चे जानते हैं बरोबर सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राजधानी स्थापन हो रही है। हम पुरुषार्थ करके .... वर्सा लेंगे। बाबा कितना रहमदिल है! आकर बच्चों को गोद लेते हैं। बच्चे कहते हैं– बाबा, आप भी वो ही हो, हम भी वो ही है जो फिर से आकर मिले हैं। आप वो ही बाबा है, हम वो ही आपके ब(च्चे) हैं। अब आप आए हो राजभाग देने। यह तो अ..... चलेगा

(अधूरी मुरली)

ओम् शांति। प्रीतम और प्रीतमाएँ। एक है प्रीतम। अनेक प्रीतमाएँ बुलाए रही हैं। एक भगवान को अनेक भक्त बुलाए रहे हैं। किसलिए? सुख के लिए। कन्या बुलाती है प्रीतम आन मिलो। किसलिए? सुख के लिए। सगाई होती है सुख के लिए; परन्तु अब बच्चे जान गए हैं जबकि रावण राज्य है तो प्रीतम से कोई सुख नहीं मिल सकता। रावण राज्य में सुख हो न सके। प्रीतमाएँ सब शोक वाटिका में हैं तब तो बुलाती है। अशोक वाटिका में तो कोई बुलावे नहीं। कोई दुख वा शोक ही नहीं तो बुलाएँगे क्यों! दुख में ही प्रीतम को याद करते हैं, फिर प्रीतम मिल जाता है तो आधा कल्प प्रीतमाएँ याद करने से (छू)ट जाती है। अभी तुम जानते हो, सबसे मीठा, सबसे प्यारा प्रीतम है ही एक परमपिता परमात्मा। सबसे ऊँचा, सबसे श्रेष्ठ। यहाँ कोई मनुष्य अपन को श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कह भी न सके। भल कहते हैं, ईश्वर सर्वव्यापी है, शिवोहम्; परन्तु एक/दो से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ तो होते हैं ना। साधु लोग में जो ऊँच होते हैं उनको और साधु लोग दंडवत् (प्रणाम) करते हैं; परन्तु सबसे ऊँच ते ऊँच एक ही प्रीतम प०पि०प० गाया जाता है। सब उनको याद करते हैं ज़रूर सुख के लिए। जब बहुत दुख होता है तो बहुत प्रीतमाएँ याद करती हैं। अभी बच्चों को इतना दुख का अनुभव नहीं है। अजन तो बहुत दुख आने वाला है। जिसको बुलाया जाता है वो आवेगा तो ज़रूर ना! तो बाप भी आते हैं। बाप का बनने से एक सेकेण्ड में सुख का वर्सा मिल जाता है। बच्चों को निश्चय रहना चाहिए हमने बाप की गोद ली है तो सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली है। बाप को बच्चा पैदा होता है, गोद में जाता है तो निश्चय हो जाता है कि यह वारिस है। यह भी बेहद का बाप है। जब अच्छी रीति उनको पहचान लेते हैं। पहचानने में कोई तकलीफ नहीं है। बच्चे बहुत हैं। गाया जाता है सन शोज़ फादर। तो किसको कहने की भी दरकार नहीं। ढेर के ढेर बी.के. हैं, इतने ढेर बच्चे सिवाय ईश्वर के किसको होते नहीं। कृष्ण तो मनुष्य है। मनुष्य को इतने बच्चे हो नहीं सकते। तुम जानते हो, हम शिवबाबा के बच्चे हैं। तुम कह सकते हो, कोई भी मनुष्य को इतने बच्चे होते नहीं। कितने बी.के. कुमारियाँ हैं। गायन तो है ना प्रजापिता ब्रह्मा का। याद करते हैं निराकार भगवान को। भगवान को ही इतने बच्चे हो सकते हैं।

तो वो निराकार जब साकार में आवे तब तो एडॉप्ट करे। शरीर न हो तो गोद कैसे लेवे! तुम ईश्वर की गोद में आए हो, जानते हो, वही प्रीतम है, सबसे मीठे ते मीठा, प्यारे ते प्यारा है। प्यार करने वाले को प्रीतम कहा जाता है। तुम जानते हो, हमारा ऊँचे ते ऊँच प्रीतम वह है। जिससे हम प्रीतमाओं को स्वर्ग के सुख घनेरे मिलते हैं, उनके सन्मुख बैठे हैं। भक्तिमार्ग में गाते भी हैं कि राम का नाम लेने से मनुष्य पार हो जाते हैं; इसलिए राम–2 बहुत कहते हैं; जैसे गंगा नदी को पतित–पावनी बहुत समझते हैं। मनुष्य वहाँ जाकर डोना लेते हैं, फिर उसमें दीवा जगाते हैं। जैसे कृष्ण को पत्ते पर सागर में अंगुष्टा चूसता हुआ दिखाते हैं, यह फिर दीवा जगा कर डोने में रखते हैं। आत्मा भी दीवा है न! मनुष्यों को तो पूरा ज्ञान नहीं। इन्हों के लिए तो जैसे एक रसम हो गई है। दीवा जगाकर, कहते हैं आत्मा पार जाती है। प०पि०प० को तो खेवैया कहा गया है, विषय सागर से पार ले जाता है। उन्होंने अक्षर सुन एक रसम कर ली है। माँ का दीवा, बाप का दीवा, अपना दीवा जगाते हैं। यह सब निशानियाँ हैं। आत्मा को ही यह शरीर छोड़ जाना पड़ता है उस पार परमधाम में। तुम जानते हो, आत्मा इस अज्ञान सागर से उस पार जा रही है। खेवैया तो बाप ही है। गंगा जी को 'खेवैया' अक्षर नहीं दिया जा सकता। खेवैया अथवा साजन तो साथ चाहिए। कितनों को साथ में उस पार ले जाते हैं। भिन्न–2 नाम रख दिए हैं। बाकी कोई वोट में या स्टीमर में बैठाए कोई ले नहीं जाते हैं। तुम बच्चे जानते हो, हम कैसे याद की यात्रा में रहते हैं। इसमें कुछ मुख से राम–2 आदि कहने की दरकार नहीं। मनुष्य तो कहते हैं– राम–2 कहो। समझते हैं यह हम नाम दान करते हैं। बाप फिर दान देते हैं अविनाशी ज्ञान रत्नों का। कहते हैं– मीठी, लाडली आत्माएँ! मुझ बाप को याद करो। यह भी नाम का दान है। शिवबाबा को याद करो। वास्तव में राम भी प०पि०प० को कहते हैं; परन्तु पिछाड़ी में फिर रघुपति राजा कह मुँझाए कर दी है। तुम बच्चों ने अब ड्रामा को जान लिया है। स्वर्ग से लेकर तुमको सब मालूम है कौन–2 आए हैं, कैसे फिर भक्तिमार्ग शुरू हुआ। जो कुछ होता आया है वह सब ड्रामा में नूँध है। यह भोग आदि लगाया जाता है, यह भी ड्रामा में नूँध है, नई कोई बात नहीं। तुम साक्षी हो देखते हो। हर एक एक्टर हैं, जानते हैं हम अपना पार्ट बजाए वापस जाते हैं खुशी से। मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। तुम जानते हो, हम स्वर्गवास करने लिए पुरुषार्थ करते हैं। मनुष्य काशीवास करते हैं न! गंगा जी के किनारे पर जाकर बैठते हैं न! शिव का (तो) मंदिर है। शिव की याद में रहते हैं सदैव। गंगा की भी महिमा करते हैं, शिव की भी महिमा करते हैं। गंगा में कोई काशी करवट नहीं खाते, शिव के आगे काशी करवट खाते हैं। जब गंगा पतित–पावनी है तो फिर वहाँ क्यों नहीं कह देते? गंगा को पतित–पावनी कहते भी हैं, फिर काशी करवट खाते हैं। बरोबर पतित–पावन तो शिव है न! यह भेंट है। शिव का मंदिर भी है, गंगा नदी भी है। बनारस में बहुत साधु लोग जाकर बैठते हैं। वहाँ शिव का मंदिर है। आगे कुएँ में शिव पर (बलि) चढ़ते थे। तुम बनारस वालों को अच्छी रीत ज्ञान दे सकते हो। बोलो, तुम (य)हाँ बैठे हो। गंगा का कंठा भी है। शिव का मंदिर भी है। फिर तुम शिव पर बलि क्यों चढ़ते हो? क्या शिव पतित–पावन है व गंगा? बहुत मनुष्य गंगा को पतित–पावनी समझ उसमें भी जाते होंगे। वास्तव में पतित–पावन तो शिव ही है। भगवान के पास ही बलि चढ़ते हैं। भगवान, भगवान पर बलि थोड़े ही चढ़ेंगे। यह तो हो नहीं सकता। ऐसे नहीं, हम भी भगवान, तुम भी भगवान। भगवान फिर पतित थोड़े ही हो सकता, जो गंगा पर स्नान करने जाते हो। सर्वव्यापी के ज्ञान से तुम झट उड़ाए सकते हो। पतित–पावन शिव है– यह सिद्ध कर बताना है। बच्चों को प्वाइंट्स दी जाती हैं समझाने लिए। काशी में समझाना सबसे अच्छा है। शिव का मंदिर है, ज़रूर कब आया है। शिव को हमेशा बाबा कहा जाता। उनको अपना शरीर कब मिलता नहीं। ऐसे तो शिव नाम बहुतों के हैं। ल०ना० अथवा कृष्ण भी लाखों के नाम होंगे; परन्तु वो कृष्ण तो सतयुग में था ना। कृष्ण के भक्त कृष्ण की मूर्ति उठाए उनकी

पूजा करेंगे। मनु(ष्य) की तो नहीं करेंगे। तो सिद्ध होता है कृष्ण सतयुग में होता है। मनुष्यों को पता नहीं है– राधे–कृष्ण कौन हैं, उन्होंने कब राजाई की है। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। विष्णु के ऊपर यह स्वदर्शनचक्रधारी नाम कैसे पड़ा, क्या किया, यह तो कोई समझाए न सके। बाप तो है निराकार। विष्णु को इतने हथियार आदि कहाँ से आए– कोई भी जानते नहीं। अपन समझते हैं, यह सब ड्रामा में नूँ(ध) है। भक्तिमार्ग में भी जिन्होंने चित्र बनाए हैं, वो ही बनावेंगे। यह बना–बनाया खेल है। आधा कल्प भक्ति, आधा कल्प ज्ञानमार्ग चलता है। तुम इन बातों को जानते हो। तुमको ही मज़ा आता होगा, जो स(च्ची)–2 प्रीतमाएँ हैं। वो प्रीतम तो झूठा है। झूठी और सच्ची चीज़ में फर्क तो है ना! झूठा प्रीतम और सच्चा प्रीतम। पत्नी, पति को प्यारा कहती है ना। अभी तुम जानते हो, तुम प्रीतमाओं को कैसा मीठा प्रीतम मिला है। उनको प्रीतम भी कहते, बाप भी कहते। बाप का भी प्यार होता है। बाप से फिर भी वर्सा मिलता है, प्रीतम से प्रीतमाओं को कोई वर्सा नहीं मिलता। अपन को प्रीतमा समझने से भी, बच्चा समझने से वर्से का टेस्ट कायदेसिर आती है। शिव को हमेशा बाबा कहते हैं। शिवबाबा। शिव पति कभी नहीं कहेंगे। अभी तुमको कोई शिव का नाम नहीं जपना है। सिर्फ बाप को याद करो। बच्चे आते हैं तो पूछा जाता है, कब ईश्वर के बने? बाप का बने तो गोद लेनी पड़े। जब तक गोद न ले वर्सा मिल न सके। माता–पिता है तो सन्मुख गोद लेनी पड़ती है। निश्चय किया, गोद न ली और मर गया तो वर्सा नहीं मिल सकता। ऐसे बहुत हैं जो वर्सा नहीं पाते फिर प्रजा में चले जाते हैं। बाप कहेंगे, मातेला बनो तो गोद लेवे। निश्चय हो गया, यह वो ही मात–पिता हैं, तो गोद में आना पड़े। फिर सर्विस कर आप समान बनाना है, प्रजा बनानी है और फिर अपना वारिस भी बनाना है। घर बैठे तो नहीं होगा, मेहनत करनी है। इन बातों पर बच्चे विचार–सागर–मंथन नहीं करते हैं। प्रीतमा बनती है तो प्रीतम की गोद चाहिए ना! वर्सा चाहिए। सिर्फ याद करने से भी काम नहीं, ईश्वर को भाकी ज़रूर पहननी पड़े। ईश्वर को भाकी कैसे पड़ती, दुनिया नहीं जानती। कृष्ण को तो भाकी पहन न सकते। हाँ, भाई–बहन तो भल कुछ भी करे। प्रिंस–प्रिंसेज़ हैं, आपस में खेलपाल करते हैं। कृष्ण लीला मशहूर है। लीला तो सतयुग में होती होगी, यहाँ थोड़े ही हो सकती। यह तो कॉपी करते रहते हैं। स्वर्ग में क्या–2 होगा, कैसे महल होंगे यह तो बच्चा महसूस कर सकते हैं। वहाँ (की) तो बात मत पूछो, (सु)ख पानी होता है। बाप सुख ही देते हैं। दुख के लिए थोड़े ही बाप आवाहन करते हैं। एक कथा सुनाते हैं ना– सन्यासी ने स्त्री को बच्चा न दे सन्यास किया। तो स्त्री ने कहा– कुल की वृद्धि कैसे होगी, आदि–2। यह तो उल्टी–सुल्टी बातों की कथाएँ बैठ बनाई हैं। बाकी यहाँ बिच्छू–टिंडन बच्चे हैं। उनकी तो दरकार नहीं। दुनिया में बड़ा दुख है। एक (घ)र में अगर बहू (छू)टेली आ जाती है तो घर को डावांडोल कर देती है। ऐसे बहुत घर बाबा के देखे हुए हैं। अभी समय बहुत थोड़ा रहा है। बाप का बने, गोद में आवे, तब बाबा मदद दे। वारिस ही नहीं बनते तो वर्सा देने वाले की मदद कैसे मिले! बाप कहते हैं– डरो मत। साहुकार लोग तो डरते हैं। यह बाप तो दाता है। भक्तिमार्ग में भी तुम मेरे अर्थ गरीबों को देते थे, उस अनुसार अच्छा जन्म मिलता था। अब डायरैक्ट कहता हूँ– हमारे बनो तो तुमको राजभाग देंगे। शिवबाबा को तो कुछ मकान आदि बनाना नहीं है। तुमसे पूछते हैं, जबकि खलास हो जाना है तो फिर यह मकान आदि क्यों बनाते हो? अरे, तब रहें कहाँ! पिछाड़ी में भी आकर बच्चों को रहना है। तुम पिछाड़ी में बहुत सीन–सीनरियाँ देखेंगे, बहुत खुशी में रहेंगे। जितना नजदीक समय आता जावेगा बाबा द्वारा बहुत सा० होते रहेंगे। जो मददगार होंगे वो पिछाड़ी में बहुत सुख देखेंगे। दुख के समय बहुत सुख देखेंगे। वो वण्डरफुल सुख है। पाकिस्तान में भी तुम मौज में बैठे थे ना। वैकुण्ठ में कैसे स्वयंवर होते हैं, ल०ना० का कैसे राज्य चलता है– सब बाबा सा० कराते थे। तो तुम बहुत देखेंगे, अगर शिवबाबा की मत पर काँटों को फूल बनाने में मदद करते रहेंगे।

कहा जाता है– हिम्मदे मर्दा मददे खुदा। ऐसे प्रीतम को तो बहुत याद करना चाहिए। दुनिया थोड़े ही जानती है, ईश्वर कैसे गो(द) लेते हैं। इतने ढेर बच्चे हैं तो ज़रूर इन्हों का मात–पिता होगा ना, जिस(से) स्वर्ग के सुख घनेरे मिलती है। यह महिमा कोई लौकिक मात–पिता की थोड़े ही है। तुम प्रैक्टिकल देखते हो, कितने बच्चे हैं, क्रियेटर गॉड (फादर) है। क्रियेट करेंगे तो एडॉप्ट करेंगे ना किस–2 द्वारा। यह है मुखवंशावली। समझना बहुत सहज है। अभी ईश्वर की गोद लेते हो, फिर दैवी गोद मिलेगी, फिर आसुरी गो(द)। ईश्वरीय गोद से हम शांतिधाम, सुखधाम जाते हैं। आसुरी गोद से दुखधाम जाते हैं। यह मंत्र याद कर लो। बाँधेली गोपिकाओं पुकारती हैं तो उन्हों के लिए कोई न कोई प्रयत्न करना पड़ता है। छोटे–2 गाँव में तो जाए न सकते। बड़े गाँव में आकर मिलते हैं। जाना तो पड़ता ही है। समझाया जाता है, बलिहार भी कैसे जाना है। राजा जनक बलि चढ़ा, फिर कहा गया– अच्छा! बच्चे, ट्रस्टी हो संभालो। रचना की पालना तो ज़रूर तुमको करनी है। तुम अपन को आत्मा ट्रस्टी समझो। माया रावण दुख देने वाली चीज़ है। इसलिए रावण का कोई मंदिर नहीं। बाकी बोता बनाए देते हैं। रावण ने बहुत दुख दिया है। जितना दुख दिया है उतना ही बरस–2 उनको जलाते ही रहते। शिवबाबा ने सुख दिया है तो उनका मंदिर बड़ा आलीशान है। रावण दुख देने वाले का मंदिर हो न सके। उनको तो खतम कर देते जो कुछ देखने में ही नहीं आता। शिवबाबा का मंदिर तो देखने में आता है, कितनी पूजा होती! वास्तव में है ही एक शिवबाबा दूसरा न कोई। और किसको पूजा कराने का (अधि)कार ही नहीं। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। अच्छा, मात–पिता, बापदादा, माँ का सभी सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ